RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-03
March -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

नारी मुक्ति आन्दोलन का स्वरूप

डॉ0 रूबी कुमारी

पी0 एच0 डी0 (इतिहास) बी0 एन0 एम0 यू0 मधेपुरा

नवजागरण काल में भारतीय स्त्री नेतृत्व के सामाजिक, राजनैतिक, यहा तक कि उसके धार्मिक स्वरूप को भी अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता। कुछ अपवाद छोड़कर प्रायः सभी स्त्री नेताओं ने इन सभी दिशाओं में साथ–साथ काम किया। वातावरण निर्माण में स्त्री–संस्थाओं और पत्रिकाओं की भी प्रायः यही शैक्षणिक भूमिका रही, जिसने आगे चलकर राजनीति, समाज–सुधार, शिक्षा क्षेत्रों को अनेक नेत्रीया प्रदान की। इस अवधि में उभरी प्रमुख नेत्रियों के नाम हैं– माँ शारदा देवी, पंड़ित रमाबाई, रमाबाई रानाडे और भगिनी निवेदिता के अलावा फ्रांसिना सोराबजी, लेडी हरनाम सिंह, बाई अमन, अवंतिका बाई गोक्षले, गोदावरी बाई, यशोदा बाई अगरकर, ऐसूबाई सावरकर, यमुनाबाई सावरकर, सावित्री बाई फुले, शांता तिलक, सत्यभागा तिलक, बाया कर्वे, लेडी सदाशिव अय्यर, श्रीमति गुरूस्वामी चेट्टी, श्रीमति ए0 एल0 हैडकूपर, सरला नायक, श्रीमति रंगम्भा, धनवंती रामाराव, माधवी अय्यर, जानकीबाई आप्टे, शारदा मेहता, ऐनी बेसेंट, सरोजनी नायडू, राधाबाई सुबायन, रानी लक्ष्मीबाई, राजबाड़े बेगम, हसरत मेहानी, मार्गरेट कजिन्स आदि। इनमें से कुछ केवल समाज सुधार कार्य कर रही थीं, कुछ केवल शैक्षणिक जाग्रति लाने में लगी थीं, कुछ समाज व राजनीति दोनों क्षेत्रों में एक साथ सक्रिय थीं, तो बाई अमन, ऐनी बेसेंट, मार्गरेट कजिन्स, सरोजिनी नायडू, अवंतिका गोखले, शान्ता तिलक, ऐसूबाई सावरकर, सरला देवी चोधरी जैसे कुछ नाम सामाजिक क्षेत्र से उठकर राजनीति में भी चमक रहे थे।

भारत में सामाजिक सुधारों तथा राजनैतिक आन्दोलन का अग्रदूत राजा राम मोहन राय को माना जाता है। उन्होंने विलियम बैंटिक की सहायता से सती प्रथा, बलि प्रथा, ठगी प्रथा पर्दा प्रथा को बन्द कराया तथा स्त्री शिक्षा पर जोर दिया। दुसरा बड़ा सुधारक आन्दोलन शुरू करने वाले आर्य समाज की स्थापना करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। उन्होने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया तथा हिन्दू समाज की बूराइयों का अंत कर स्त्री पुरूष के लिए समान उच्च मानवीय बौद्धिक गुणों का समर्थन किया। इससे भी स्त्रियों के लिए सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन का मार्ग खुला। इसके बाद रामकृष्ण मिशन, वेद समाज, प्रार्थना समाज आदि अस्तित्व में आए। इन संस्थाओं ने भी भारतीय अध्यात्म दर्शन पर प्रकाश डालने के साथ राष्ट्रीय नवजागरण एवं स्त्री जागरण में अपना पर्याप्त योगदान दिया। थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना मैडम ब्लावत्सकी और कर्नल अलकाट ने 1875 में अमेरीका में की थी। 1876 में मैडम ब्लावत्सकी भारत आ गयीं और उन्होंने 1879 में अड्यार (तमिलनाडू) में मुख्यालय बनाकर भारत के प्रमुख नगरों में इस संस्था की शाखाऐं स्थापित की। मूलतः यह संस्था सभी धर्मों के मालिक सिद्धान्तों में विश्वास करती थी। अतः इसका उद्देश्य विश्वव्यापी मानव समाज में भ्रातृत्व उत्पन्न करना था। तो इससे भी स्त्री स्वातंत्रय और स्त्री नेतृत्व को बल मिला। एनी बेसेन्ट ने इस संस्था के निमंत्रण पर भारत आकर 1893 से इस संस्था का संचालन किया। नामधारी सम्प्रदाय बहुत व्यापक व प्रभावपूर्ण नहीं रहा। पर महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार लाने और कुरीतियों के निवारण में इस संप्रदाय की भागीदारी भी महत्वपूर्ण रही। पंजाब में हिन्दू–सिख एकता को बढ़ावा देने वाले इस सम्प्रदाय का नाम कूका–विद्रोह के साथ भी जुड़ा है। 1872 में मलेरकोटला के शस्त्रागार पर हमला करके सौ कूकाओं द्वारा शस्त्र लूट लिए गए थे। मुठभेड़ में आठ पुलिसमैन व सात कूका मारे गए थे। शेष गिरफ्तार हुए। जिनमें से 49 को एक दिन मशीनगन से उड़ा दिया गया था। कूका विद्रोह के एक कृषक नेता रतन सिंह की लड़की हुक्मी गिर गिरफ्तार की गई, जिसने आगे चलकर पंजाब में स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व किया। संगरूर की इन्द्रकौर नामक कूका स्त्री को पकड़कर मार दिया गया था। इसके अलावे दो अन्य स्त्रियो को भी पकड़कर सेना के हवाले कर देने का विवरण मिला है। जिनके नाम अज्ञात हैं। उनका आग क्या हुआ, यह भी अज्ञात है। इस तरह इस नवजागरण काल में इन संस्थाओं ने एवं प्रसिद्ध समाज सुधारकों ने सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास का जो संयुक्त आन्दोलन चलाया उसमें महिलाओं की प्रारंभिक भूमिका अधिकतर राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा फूले, महर्षि कर्वे, मालावारी, भंडारकर आदि पुरूषों की प्रेरणा से

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्थानीय शाखाओं में भागीदारी तक ही सीमित रही थी। फिर भी उसने स्थानीय, प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तरों पर अगले नेतृत्व को राह दी।

भारत में नारी मुक्ति और देश की गुलामी से मुक्ति ये दो बाते कभी पृथक नहीं रहीं। इसी अर्थ में भारत का नारी–मुक्ति आन्दोलन पश्चिम के 'विमेन लिव' से बिल्कुल अलग है। वहा स्त्रियों को लम्बी अवधि तक पुरूषों के खिलाफ मोर्चा बाँधकर लड़ना पड़ा था और इस लड़ाई में बहुत कष्ट व अपमान सहना पड़ा था। जबकि भारतीय आन्दोलन में गाँधीजी के आह्वान पर हजारों की संख्या में अमीर–गरीब पढ़ी–लिखी स्त्रियाँ देश के काम के लिए घरों से बाहर निकल आई। उनकी भागीदारी ही नहीं नेतृत्व–कुशलता भी प्रखरता से सामने आई। भीकाजी कामा ऐनी बेसेन्ट पूर्वाध–काल के सराजिनी नायडू, राजकुमारी अमृतकैर, विजयलक्ष्मी पंडित, दुर्गाबाई देशमुख, कमला देवी चट्टोपाध्याय आदि मध्यकाल के और अरूणाआसफ अली, सुचेताकृपलानी, कैप्टन लक्ष्मी जैसे नाम उत्तरार्ध काल के अग्रणी नाम हैं जिनके नेतृत्व व निर्देशन में न जाने कितनी उत्साही युवतियाँ आगे आई और जिनसे परणा लेकर आज भी न जाने कितनी महिलाएं विभन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन विफल हो चुका था। दोनों ओर की अपार जन–धन हानि के दो स्पष्ट परिणाम सामने आये थे। अंग्रेजो को इससे सबक मिला, तो 1858 में महारानी विक्टोरिया की धोषणा ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया। भारतीयों की आँखे खुली तो उन्होने महसूस किया कि ढंग से लड़ने के लिए व लक्ष्य–प्राप्ति के लिए पहले राष्ट्रीय स्तर पर जनजागरण, संगठन और एकता होना चाहिए। दोनों ओर इसके तैयारिया चलने लगी थी। सही मायने में प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन अग्रेजों और भारतीयों राजाओं के बीच का संघर्ष था न कि जनसंघर्ष। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से इस प्रसंग मं एक घटना उल्लेखनीय है– दिल्ली के अंतिम बादशाह बहादूर शाह जफर ने राजपूतों को विद्रोह का आमत्रण देते हुए अपने पत्र में यह भी लिखा था कि दिल्ली के सिंहासन पर बाद में आपलोग परस्पर सहमति से जिसे चाहे पदासीन कर दे पर इस समय हमारा समान लक्ष्य सामुहिक शक्ति से अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना होना चाहिए। फिर भी अपना राज्य बचाने अनेक राजा अलग–अलग बैठे रहे, जिससे क्रांति का सामुहिक बल नहीं मिला। पर यह निश्चित है कि तब इसका उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर प्रजातंत्र की स्थापना करना न था, न ही इसने जनता की बहुत बड़ी भागीदारी थी। विफलता के कारणों में से यह भी एक बड़ा कारण था। लेकिन बाद का हमारा स्वाधीनता आन्दोलन जनता को प्रजातांत्रिक शासन पद्धति के लिए तैयार करने वाला एक क्रमिक आन्दोलन था उसका प्रारंभ विभिन्न संगठनों और क्रमिक प्रस्तावों याचनाओं की नीति से हुआ। जिसमें आगे चलकर तीब्र अहिंसक आन्दोलन, गरम दल की गरमजोश गतिविधियाँ उग्र क्रांतिकारी विस्फोट एवं अंत मे कुछ सैनिक विद्रोह भी आ जुड़े तब जाकर आजादी संभव हो पाई।

पुनस्थापना हुई, जिसने नई परणा जगाई। राजनीति व धर्म का समन्वय हमारी पुरी राष्ट्रीय परंपरा थी। नवजागरण काल में भी इन दोनों धाराओं को अलग करके देखना कठिन है। इसी संदर्भ में हिन्दू समाज में सुधार व कुरीतियों के निवारण पर भी सोचा गया तो ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसाफिकल सोसाइटी, नामधारी सम्प्रदाय जैसी संस्थाएं सामने आई। जिनमें समाज सुधार द्वारा जनजाग्रति और स्वतंत्रता के लिए तैयारी इन दोनों बातों पर समान ध्यान दिया गया। ब्रह्म समाज की स्थापना सन् 1828 में राजा राममोहन राय ने कलकत्ता में की थी। इसकी स्थानोय शाखाओं में प्रारंभ से ही महिलाओं की भागीदारी रही। ब्रह्म समाज पहली संस्था थी जिसने महिलाओं के पृथक अस्तित्व को मान्यता दी। उन्हें घरों से बाहर कार्य के लिए अवसर व प्रोत्साहन दिया। महिलाएं ब्रह्म समाज की सभाओं में नियमित भाग लेती थी। महिला–शिक्षा, समाज–सेवा, स्वतंत्रता की भावना पर साथ–साथ जोर था।

दुसरा बड़ा समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द ने भी स्त्री–शिक्षा का समर्थन किया और हिन्दू समाज की बुराइयों का अन्त कर स्त्री–पुरूष के लिए समान उच्च मानवीय बौद्धिक गुणों का समर्थन किया। इससे स्त्रियों के लिए सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन का मार्ग खुला। इसके बाद रामकृष्ण मिशन, वेद समाज, प्रार्थना समाज आदि अस्तित्व में आए। इन संस्थाओं ने भी भारतीय आत्म–दर्शन पर प्रकाश डालने के साथ राष्ट्रीय नवजागरण तथा स्त्री जागरण में अपना पर्याप्त योगदान दिया।

इस नवजागरण काल में सामाजिक सुधारों की लहर के साथ राष्ट्रीय चेतना को झकझोर कर जगाने का काम एक और सामाजिक संस्था कर रही थी, दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति के लिए राजनीतिक संगठन भी जन्म ले रहे थे। 1837 में जमींदार एसोसिएशन का जन्म केवल जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए ही हुआ था जिसमें गैर–सरकारी अंग्रेज सदस्य भी थे। इसके अलावा देवेन्द्र कुमार ठाकुर द्वारा स्थापित 'ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन' कम से कम ऐसी पहली संस्था

RRIJM 2015, All Rights Reserved

थी जिसने ब्रिटिश शासन के राजनैतिक और आर्थिक परिणामों की जांच की और सुधारों के लिए सुझाव दिये। इसी काल में बंगाल में समाचारपत्र–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अनेक क्रांतिकारी पुस्तकें भी सामने आई। राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे सुधारक लेखकों के प्रचंड लेखों और बंकिमचन्द्र चटर्जी के सुपसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' के गीत 'बन्देमातरम' ने जो धूम मचाई उससे लार्ड लिटन घबरा गया। प्रेस स्वतंत्रता छीनने के लिए 1878 में वर्णाकुलर प्रेस एक्ट लागू किया गया। बंगाल की 35 में से 15 पत्रिकाओं पर राजद्रोह उभारने का आरोप लगाया गया और अंधाधुंध गिरफ्तारियाँ की गई। उसी समय 'आर्म्स एक्ट' लागू किया गया। जिसके परिणामस्वरूप कई राष्ट्रवादी क्रांतिकारी संस्थाए सामने आई– पीपुल्स एसोसिएशन, इण्डियालीग, भारत सभा, जातीय गौरव संपादिनी सभा आदि। हिन्दू मेला, चैती मेला, गणेश उत्सव, शिवाजी उत्सव, वीराष्टमी उत्सव और प्रतीपादित्य उत्सव जैसे जन आयोजन व उत्सव मिलन करके स्वदेशी भावना व राष्ट्रीय चेतना जगाने के आन्दोलन भी महाराष्ट्र और बंगाल में चलाये गये। इसके साथ–साथ आगे चलकर अनेक क्रांतिकारी संगठन जैसे– गुप्त समिति, अनुशीलन समिति, अभिनव भारत, भारत माता सोसाइटी, कालीघाट दल, युगान्तर दल आदि शक्तिशाली गुप्त संगठन भी बने। इन संगठनों के साथ अनेक वीर महिलाए भी जुड़ी हुई थी। गुप्त अड्डों में भी युवक– युवतियों को सामाजिक शिक्षा के साथ खुद को बचाने की भी शिक्षा दी जाती थी।

अंग्रेजों की दमनात्मक कारवाईयों ने अखिल भारतीय संगठन का मार्ग तेजी से प्रशस्त किया। मार्च 1885 में सर ह्यूम ने इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की। प्रारंभ में ही उन्होंने कहा था– ''स्त्रियों को साथ लिए बिना संगठन की गतिविधियों की सफलता संदिग्ध होगी और प्रयत्न निष्फल रहेंगे।'' इसलिए कांग्रेस की स्थापना के चंद वर्षो बाद ही कांग्रेस अधिवेशनों में महिला–प्रतिनिधि भाग लेने लगी थी। सन् 1890 ई0 में पंडित रमाबाई और स्वर्ण कुमारी देवी के प्रयत्नों से लगभग 100 महिलाओं ने कलकत्ता–अधिवेशन में भाग लिया। श्रीमति ज्योतिर्मया गांगुली ने सन् 1909 में प्रथम बार कांग्रेस मंच से भाषण दिया और उनके नेतृत्व में लडकियों का एक सेवा दल कांग्रेस अधिवेशन की व्यवस्था संभालने पहुचा। धीरे–धीरे महिलाओं की संस्था बढ़ती गयी और फिर गाँधीजी के आगमन के साथ तो जैसे कार्यकर्ताओं की बाढ़ ही आ गयी थी।

संदर्भ–

1. द इंडियन इयर बुक 1914, पृष्ठ–476.
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 35वें अधिवेशन की रिपोर्ट, पृष्ठ–46.
3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 32वें अधिवेशन का प्रतिवेदन, 1917.
4. बिहार–उड़ीसा पुलिस ऐब्सट्रेक्स ऑफ इन्टेलिजेंस 1917.
5. भारत की अग्रणी महिलाएं– आशारानी व्होरा, पृष्ठ–106–7.
6. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और महिलाएं– पी0 एन0 चोपड़ा, पृष्ठ–255.
7. वूमेन आफ इंडिया– तारा अली वेग। पृष्ठ–87.
8. भारतीय इतिहास कोष, पृष्ठ–127
9. भारत में अंगेजी राज, सुन्दरलाल, पृष्ठ–324.
10. भारत का मुक्ति संग्राम, अयोध्या सिंह, पृष्ठ–433

RRIJM 2015, All Rights Reserved